हिंदी प्रचार सोशल मीडिया के साथ

विद्या एम एच

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी डिपार्मेंट, डॉ मनमोहन सिंह बैंगलोर सिटी यूनिवर्सिटी सेंट्रल कॉलेज कैपस बैंगलोर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18790516

ABSTRACT:

सोशल मीडिया और आधुनिक तकनीक ने हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। फेसबुक, यूट्यूब, वॉट्सऐप और ब्लॉगिंग जैसे डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को न केवल साहित्य तक सीमित रखा है, बल्कि इसे जन-जन की संवाद भाषा बना दिया है। यूनिकोड के आगमन और ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा हिंदी के प्रयोग ने इसे रोजगार और व्यापार की भाषा के रूप में भी सशक्त किया है। तकनीकी विकास और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने हिंदी को युवा पीढ़ी से जोड़कर इसे एक प्रभावशाली 'ग्लोबल लैंग्वेज' बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है, जिससे इसकी स्वीकार्यता राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी है।

KEYWORDS:

सोशल मीडिया, हिंदी प्रचार, डिजिटल तकनीक, वेब मीडिया, संचार माध्यम.

आज हमारा देश लोकतंत्र का देश है। विधायिका, कार्यपालिका के बाद मीडिया का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। पूरे विश्व में हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार में मीडिया का प्रमुख स्थान रहा है। भारत देश में 19वीं से 20वीं सदी में अनेक संस्थाओं, लेखकों और कवियों का योगदान रहा है। इसमें प्रमुख समाचार पत्रिका 'उदन्त मार्तण्ड' का सर्वप्रथम योगदान माना गया है। सन 1893 में नागरी प्रचारिणी सभा और हिंदी साहित्य सम्मेलन का योगदान अग्रणी है। उसी तरह से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास (1918) ने हिंदी भाषा के उज्ज्वल भविष्य के लिये अद्वितीय कार्य किया है।

हिंदी भाषा आज विश्व की दूसरी भाषा है जो सबसे ज्यादा बोली जाती है। अमेरिका जैसे देशों में हिंदी भाषा का पठन किया जाता है। हिंदी साहित्य और संगीत का बोलबाला है। हिंदी समाचार पत्रों की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है। हिंदी पत्रिकाओं की संख्या बढ़ रही है। यूनिकोड फॉन्ट के विकास के कारण इंटरनेट की दुनिया में बड़ी क्रांति हुई है। मीडिया के माध्यम से दुनिया को पता चला है कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हुआ है। अध्ययन के क्षेत्र में हिंदी भाषा, व्याकरण और साहित्य से मिश्रित होती है, परंतु उसके विपरीत मीडिया की हिंदी भाषा सटीक और सरल होती है। हिंदी भाषा दुनियाभर में बोली जाती है और समझी जाती है। मीडिया ने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनियाभर में हिंदी भाषा की फिल्में तथा टेलीविजन के कार्यक्रम देखे जाते हैं। इससे हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हो रहा है। सोशल मीडिया, इंटरनेट और मोबाइल के कारण युवा पीढ़ी द्वारा हिंदी भाषा का प्रयोग तथा उपयोग हो रहा है। भाषा जनमानस को जोड़ती है।

टाइपराइटरों और मशीनों का बड़ा योगदान है। हिंदी भाषा के प्रचार में गोदरेज टंकन मशीन का बड़ा योगदान है। 21वीं सदी में इलेक्ट्रो-मेकेनिकल टेलीप्रिंटर भी देवनागरी लिपि में बनाया गया है। 80 के दशक में इलेक्ट्रॉनिक टेलीप्रिंटर और कम्प्यूटरों का प्रयोग बढ़ा है। भारत सरकार ने इस दिशा में बड़ा कदम उठाया है। टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर और कम्प्यूटरों के प्रयोग हेतु पटल तैयार किये हैं। भारतीय भाषाओं के लिये टेक्नोलॉजी विकास परियोजना के नये-नये कार्यक्रम शुरु किये गए। 95 करोड़ से अधिक लोग हिंदी भाषा का व्यवहार करते हैं। 90 के दशक में हिंदी पत्रकारिता के कई अखबार निकले हैं; जैसे- अमर उजाला, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, प्रभात खबर आदि। हिंदी

मीडिया ने कम समय में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। भारत में हिंदी न्यूज़ चैनल 182 से ज्यादा हैं। वर्तमान युग हिंदी मीडिया का युग है। इंटरनेट, मोबाइल, वेब विज्ञापन नेटवर्क हिंदी को सपोर्ट कर रहे हैं। इंटरनेट पर 15 से ज्यादा हिंदी सर्च इंजन हैं।

हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी किया है। हमारे सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की वेबसाइट हिंदी में है। इसी तरह स्टेट बैंक की वेबसाइट हिंदी में है। रेलवे की साइट हिंदी में है। हिंदी साइट तथा उस साइट पर विभिन्न प्रकार की हिंदी पुस्तकें खोजी जा सकती हैं। लोकप्रिय हिंदी भाषा, व्याकरण, विज्ञान और संगम लिपि का प्रयोग काफी समृद्ध है। भारत में 100 मिलियन और 33 मिलियन के पार लोग फेसबुक और ट्विटर का प्रयोग करते हैं। व्हाट्सएप तत्क्षण मैसेजिंग सेवा में तो हिंदी ने धूम मचा रखी है। यूनिकोड के माध्यम से इंटरनेट पर हिंदी देवनागरी लिखना-पढ़ना आसान हुआ है। इंटरनेट में कई हिंदी भाषा के ब्लॉगों का पदार्पण हुआ है। इंटरनेट के माध्यम से 'वॉयस सर्च' (बोलकर खोजने) की सुविधा भी है। 'डिजिटल इंडिया', माननीय नरेंद्र मोदी जी का नारा अग्रणी हो रहा है।

व्यापक रीति से भारतीय भाषाओं को समझने के लिए, एक सामान्य तौर पर बोली जाने वाली हिंदी भाषा का आज राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'ग्लोबल लैंग्वेज' की तरह ज्यादा प्रयोग भी हो रहा है और आम तौर पर समझी और बोली भी जाती है। पूरे भारत देश में हिंदी भाषा को और विचारों को सही भावनाओं के साथ सशक्त माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का आसान तरीका सोशल मीडिया है। युवा वर्ग में आमतौर पर हिंदी भाषा और फिल्मों का ज्यादा असर देखने को मिलता है और इसका ग्राफ डिजिटल मीडिया की ओर बढ़ता ही जा रहा है। गूगल में सबसे ज्यादा खोज हिंदी भाषा के माध्यम से ही होती है। वैश्वीकरण की इस अंग्रेजी ताकतवर दुनिया में भारत बिना हिंदी के नहीं चल सकता। मोबाइल कंपनियों ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध कराई है।

हमारे देश में माननीय प्रधानमंत्री जी भी अपने ट्विटर अकाउंट पर हिंदी में ही संबोधन करते हैं और हिंदी में ही अपने अभिप्राय व्यक्त करते हैं। सोशल मीडिया का हिंदी में प्रचार-प्रसार बहुत हो रहा है, देश-विदेश में भी। भाषा वही जीवित रहती है जहाँ जनता इसका भरपूर प्रयोग करती है। जन-जागृति बढ़ाने के कार्यक्रम सोशल मीडिया में हिंदी

भाषा में ही सबसे ज्यादा होते हैं। सोशल मीडिया में यूट्यूब हो या ब्लॉग, हिंदी के प्रयोग के कारण ग्रामीण जनता तक तकनीकी तौर पर जुड़ सकते हैं, जिस पर हम ज्ञानवर्धक सूचनाएँ और स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त कर सकते हैं। सोशल मीडिया का प्रभाव और संचार उपलब्ध हो रहा है। नई पीढ़ी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी से भी जुड़ती जा रही है और आकर्षित होती जा रही है। साथ ही हिंदी भाषा अपने पैरों पर खड़ी भी हो रही है और उसकी शाखाएं चारों तरफ फैल रही हैं।

सोशल मीडिया में हिंदी ब्लॉगिंग और पत्रकारिता का दायित्व हमें देखने को मिलता है। बिना कागज-पेन के ही एक प्रेषक और एक पाठक हिंदी साहित्य से जुड़ता जा रहा है, जो सोशल मीडिया के माध्यम से ही संभव हो चुका है। देवनागरी हमारी लिपि और हिंदी भाषा, सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा प्रचलित और लोकप्रिय भाषाओं में से एक है। भाषा का अच्छा पठन और एक अच्छी भाषा की गहराई और ज्ञान ही लोगों की सोच पर और उनके विचारों पर प्रभाव डालकर, हिंदी भाषा का प्रयोग बहुत अच्छे से देखने को मिल रहा है।

हिंदी भाषा दुनिया भर में बोली भी जाती है, समझी भी जाती है। मीडिया ने हिंदी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनिया भर में भारतीय फिल्म और टेलीविजन कार्यक्रम देखे जाते हैं, जिससे दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है। सोशल मीडिया, इंटरनेट और मोबाइल के कारण युवा पीढ़ी भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है। यह भाषा की ताकत को बताती है। भाषा बोलने वालों को जोड़ने का काम भी करती है। मीडिया में जिस हिंदी भाषा का प्रयोग होता है, उसमें सामान्य बोलचाल से प्रचलित अंग्रेजी, अरबी और भारतीय संस्कृति के तत्सम-तद्भव वाले शब्दों का प्रयोग भी होता है। मीडिया में प्रयुक्त होने वाली हिंदी को भी प्रयोजनमूलक बनाने का श्रेय मीडिया को ही जाता है।

ऑनलाइन व्यापार:

आज हम देख रहे हैं कि दुनिया में बाजारवाद का भूचाल बढ़ रहा है। हर किसी के लिए अपना सामान बेचने की अंधाधुंध होड़ लगी हुई है, चाहे वह ऑनलाइन हो या ऑफलाइन। उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयत्न किया जा रहा है। मीडिया में भी विभिन्न कंपनियां अपने माल को बेचने के लिए उचित विज्ञापनों का प्रयोग कर रही हैं। उन विज्ञापनों में अधिकतर हिंदी भाषा का प्रयोग होता है, क्योंकि उन्हें पता है कि भारत में अधिकांश जनसंख्या हिंदी भाषी है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया:

भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पिछले 15-20 वर्षों में घर-घर में पहुँच गया है। फिर भी, चाहे शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र, इन शहरों और कस्बों में केबल टीवी से सैकड़ों चैनल दिखाए जाते हैं। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में कम से कम 80% परिवारों के पास अपने टेलीविजन सेट हैं और मेट्रो शहरों में रहने वाले दो-तिहाई अपने घरों में केबल कनेक्शन लगवा रहे हैं। इसके साथ ही शहर से दूर-दराज के क्षेत्रों में भी लगातार 'डिजिटल डायरेक्ट टू होम' (DTH) सर्विस का विस्तार हो रहा है।

प्रारंभ में केबल सीमित क्षेत्र से जुड़े गीत, संगीत, नृत्य से जुड़ी प्रतिभाओं के प्रदर्शन का माध्यम बना और लंबे समय तक इसका इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सिर्फ फिल्मी कला क्षेत्र से जुड़ा रहा। फिर भी, जिसमें नैसर्गिक एवं स्वाभाविक प्रतिभा का प्रदर्शन हो, हिंदी के प्रयोग ने इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम में क्रांति लाई है। टेलीविजन, रेडियो आदि के प्रति चरण में आम बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग करके अनेक प्रोग्राम प्रसारित कर रहे हैं, क्योंकि हिंदी ही वह भाषा है जो आसानी से बोली और समझी जाती है। दर्शक अपनी पसंद के नाटक, फिल्म, कृषि संबंधित प्रोग्राम, ज्ञानवर्धक बातें आदि माध्यमों से देखते हैं। आज इस तकनीकी युग में हिंदी भाषा में प्रकाशित बहुत से अखबार एवं पत्र-पत्रिकाएं मेन इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। हिंदी में प्रसारित विज्ञापनों के द्वारा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने भारत में क्रांति लाई है।

वेब मीडिया:

हम कह सकते हैं कि वेब मीडिया एक ऐसा गुरुकुल है जहाँ प्रत्येक भाषा एक सखी की भांति प्रतीत होती है। इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम और कंप्यूटर आदि के उपयोग में हिंदी ने अपनी जगह बना ली है। इससे एक तरफ इन माध्यमों में हिंदी का प्रचार हो रहा है, तो दूसरी तरफ हिंदी अपना बाजार भी बना रही है। डिजिटल मीडिया के कुछ क्षेत्रों में अब हिंदी भाषा के प्रयोग की सुविधा उपलब्ध हुई है और वहां उस क्षेत्र में भी हिंदी भाषा का प्रवेश हुआ है। भारत सरकार द्वारा ऑनलाइन बैंकिंग को महत्व देने के कारण अब कई ऐप्स (Apps) में हिंदी का अनुप्रयोग बढ़ने लगा है। जैसे पहले संचालन सौदा के लिए फोन पे, डेबिट आदि हिंदी भाषा में उपलब्ध नहीं थे, पर अब हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं। ऑनलाइन शॉपिंग के लिए फ्लिपकार्ट, लाइम रोड, अमेज़न, मिंत्रा के सारे ऐप हिंदी में भी प्रयोग किए जा सकते हैं। डिजिटल मीडिया का

सबसे ज्यादा प्रयोग उपभोक्ता भारत देश में ही हैं और इसमें सभी उपभोक्ता हिंदी भाषा का प्रयोग सबसे ज्यादा करते हैं।

निष्कर्ष:

इस प्रकार से इक्कीसवीं सदी में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का योगदान प्रमुख रहा है। मीडिया के इस युग में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया का योगदान है। आधुनिक जगत में फिल्में, प्रिंट मीडिया, विज्ञापन, पत्रकारिता और इंटरनेट का भी हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ:

1. डॉ. सुनील कुमार लवटे, हिंदी वेब साहित्य, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 2013, पृ. 34.
2. अनामी शरण बबल, मीडिया के बदलते तेवर, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2009, पृ. 40.
3. हिंदी के प्रचार प्रसार में मीडिया की भूमिका, https://www.google.com/search?q=tatkalexpress.blogspot.com
4. मीडिया और हिंदी - दूसरी दुनिया
5. https://hi.wikipedia.org
6. www.jansatta.com